आधुनिक हिन्दी साहित्य

अभिव्यक्ति के विविध आयाम

संपादिका: डॉ अंजु बाला

आधुनिक हिन्दी साहित्य : अभिव्यक्ति के विविध आयाम

संपादिका :
डॉ. अंजु बाला

साहित्य संस्थान
गाजियाबाद-201102

ISBN : 978-93-95397-79-7

© : डॉ. अंजु बाला

मूल्य : ₹ 600/-

प्रथम संस्करण : सन् 2024

प्रकाशक : साहित्य संस्थान
ई-10/660, उत्तरांचल कालोनी,
(नियर संगम सिनेमा), लोनी बॉर्डर,
गाजियाबाद-201102
मोबाइल : 8383042929
email : mdsaleem885@gmail.com

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : आशीष प्रिंटर्स
गाजियाबाद

Adhunik Hindi Sahitya : Abhivyakti Ke Vividh Aayam
Edited By. *Dr. Anju Bala*

प्रवासी विमर्श : तेजेंद्र शर्मा की कहानियों के सन्दर्भ में 95
डॉ. लक्ष्मी गुप्ता
अनुवाद में फलीभूत होती हिन्दी 107
ललित शर्मा
प्रवासी हिन्दी कथा साहित्य में मानवीय संवेदना 112
डॉ. अमनदीप कौर
डॉ. भरत मिश्र 'प्राची' की कहनियों में बदलते रिश्तों का परिवेश: विशेष संदर्भ 'ईगो' 118
कार्तिक मोहन डोगरा
हिन्दी सिनेमा में भारतीय संस्कृति की झलक 122
संदीप कौर
हिन्दी आलोचना के नए आयाम 133
अरविन्द कुमार
आधुनिक हिन्दी व्यंग्य-साहित्य में सामाजिक सरोकार : परसाई जी की व्यंग्य रचनाओं के आलोक में 138
श्याम लाल
हिन्दी काव्य में चित्रित दलित विमर्श 147
डॉ. ललिता शर्मा
आधुनिक हिन्दी साहित्य में कबीर की प्रासंगिकता 151
डॉ. नरेश कुमार सिहाग

प्रवासी हिन्दी कथा साहित्य में मानवीय संवेदना

डॉ. अमनदीप कौर
सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर

'प्रवासी' शब्द से तात्पर्य है– विदेश वास या अपने देश को छोड़कर दूसरे देश में निवास करना। प्रवास शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता है जो विदेशी एजेंटों द्वारा गिरमिटिया के रूप में बहला फुसलाकर सुखद भविष्य का सपना दिखाकर दूर देशों में ले जाए थे या जो बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में विकसित देशों में शिक्षा और रोजगार हेतु गए और वहीं बस गए। उनके द्वारा हिंदी भाषा में लिखा गया साहित्य प्रवासी हिंदी साहित्य कहलाया। प्रवासी हिंदी साहित्य में मानवीय संवेदना वहां के लेखकों द्वारा लिखी गई कविता, कहानी आदि अन्य साहित्यिक विधाओं में आदि से अंत तक विद्यमान है। 'हिंदी लघु कथा का मनोविज्ञान' में बलराम अग्रवाल संवेदना के संबंध में लिखते हैं– 'प्रत्येक व्यक्ति के पास अपने व आसपास के जीवन की चर्या अथवा जीवन में होने वाली कुछ सामान्य - असामान्य घटनाओं के ऐसे अनुभव होते हैं जिन पर तुरंत ही यथेष्ट ही ध्यान नहीं जाता। लेकिन अनुकूलन पाकर वे बारी-बारी स्मृति में आते हैं और सुख अथवा पीड़ा की वैसी ही अनुभूति कराते हैं, जैसे की प्रथम बार घटित होने, सुनने-देखने- पढने पर हुई होती है। यह एक प्रकार का भावबोध होता जो कभी व्यक्त तो कभी अव्यक्त रहता है। इस भावबोध से युक्त प्रत्येक सृजनशील व्यक्ति चाहे वह किसी भी क्षेत्र में सृजनरत क्यों न हो इस बोध को अपने भीतर सुरक्षित रखता है। वह उसके साथ संवेदना के स्तर पर जुड़ाव महसूस कर उद्वेलित रहता है। एक संवेदनशील प्राणी होने के नाते वह इस बोध को लंबे समय तक अपने मन व मस्तिष्क में नहीं रख पाता और इसे साझा करने के लिए किसी माध्यम की तलाश में रहता है। इस अनुभूति के चलते ही व्यक्ति, व्यक्ति व समाज के साथ आत्मीयता के प्रगाढ में बँधता है।'[1] यही आत्मीयता का प्रगाढ बंधन में बंधना मानवीय संवेदना को उजागर

करता है।

प्रवासी हिंदी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में अपने प्रवास के दुरूख-दर्द और संवेदनाओं के साथ अपने देश के संस्कारों को जोड़कर तत्कालीन विसंगतियों को उकेरा है। ये संवेदनाएँ अब धीरे-धीरे हिंदी साहित्य का अंग बनती जा रही हैं। प्रवासी साहित्य में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति को समन्वित करके हिंदी पाठकों को एक नवीन संस्कृति तथा साहित्य की महत्ता से अवगत कराने का महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है।

प्रवासी हिंदी साहित्य मनोवैज्ञानिक उहा-पोह, संकोच तथा साहस का साहित्य है। उसमें कहीं पूर्वाग्रह टूटता है, तो कहीं नई कल्पनाएँ मूर्त रूप लेती हैं। अपने जीवन में जिये हुए त्रासद और सुखद अनुभवों से अवगत कराते इस साहित्य में आशा और निराशा की लहरें उठती-गिरती हैं। प्रवास में रहकर खुद को स्थापित करना तथा अपनी भारतीय संस्कृति, परंपरा से संबद्ध रहना इस बात का प्रमाण है कि प्रवासी हिंदी लेखक विशिष्ट हैं, दो-दो संस्कृतियों को जोड़ने का काम कोई विशिष्ट ही कर सकता है।

हिंदी में प्रवासी साहित्य, नवयुगीन साहित्यिक विमर्श है। हिंदी में इसका प्रारंभ प्रेमचंद की 'यह मेरी मातृभूमि है' तथा 'शूद्रा' कहानियों से हुआ है। इन कहानियों में उन भारतीय बंधुआ मजदूरों की व्यथा व्यक्त है जिन्हें मॉरीशस ले जाया गया था तथा कुछ भारतीय जो अमेरिका से लौटे थे, उनकी संवेदना अंकित है। प्रवासी हिंदी लेखकों ने जीवन के विविध पक्षों पर लेखन कार्य किया है। प्रवासी हिंदी साहित्य में मॉरीशस की रचनाओं की अपनी अलग पहचान है। मॉरीशस के कहानीकार हेमराज सुंदर की कहानी 'आस्था',धर्मवीर घूरा की 'चिल्लाहट', अमेरिका की कहानीकार अंशु जौहरी की कहानी 'एक निर्विकार' तथा प्राण शर्मा की लघु कहानी 'इकलौती बेटी' आदि मर्मस्पर्शी कहानियाँ हैं। इन कहानियों में गहरी मानवीय संवेदनाओं को वर्णित किया गया है।

हेमराज सुंदर की कहानी आस्था नारी की सहनशीलता की गहराई को उजागर करती है इसमें बताया गया है कि कैसे एक सामान्य नारी की आस्था विश्वास उसे देवी बना देता है। फूलमतिया के संबंध में लेखक कहता है कि वह सामान्य नारी है, घर में कार्य करने वाली साधारण जीवन बिताने वाली नारी। जिस प्रकार भारतीय नारी को उसकी सहनशीलता के कारण देवी माना गया है उस पर कितने ही अत्याचार समाज,पति द्वारा किए जाते हैं पर फिर भी वह उसे सहन करती रहती है। उसी प्रकार फूलमतिया के जीवन को देखकर मन में वेदना का भाव उमडने लगता है जिससे उसके प्रति सहानुभूति पैदा होती है। यही सहानुभूति उसे आस्था विश्वास

से देवी बना देती है। लेखक संवेदनशील होकर कहता है कि– "मैं उसकी आस्था के संबंध में सोचता रह जाता हूँ। मेरे नारी मुक्ति संबंधी विचारों को धक्का लगता है, यह हिंदू नारी ही है जो विषम परिस्थितियों में भी अपना धैर्य नहीं खोती और सब कुछ सहते हुए भी आस्था पर अटल रहती हैं।"[3]

मॉरीशस के कहानीकार धर्मवीर धूरा की 'चिल्लाहट' कहानी में रमुआ की मानवीय संवेदना को व्यक्त किया गया है। रमुआ के जेल में बंद होने की, जेल से छूटने और छूटने के बाद समाज से मिलने वाले अत्याचार के प्रति कुछ न कर पाने से पैदा हुई कुछ कर गुजरने की चिल्लाहट के कारण वापस जेल में पहुंचने की वेदना विद्यमान है।

'एक निर्विकार' कहानी अमेरिका के कहानीकार अंशु जौहरी की कहानी है इसमें अल्जाइमर बीमारी से उत्पन्न मानवीय संवेदना को व्यक्त किया गया है। इस बीमारी के कारण कहानी की नारी पात्र शुक्ति की अम्मा को भूलने की आदत पड़ जाती है जिसके कारण पूरा घर परेशान रहता है। वह पार्किंग में अपनी गाड़ी भूल जाती है, घर का फोन नंबर और पता भी भूल जाती है फिर पुलिस की मदद से घर आ पाती है। वह अपने पुत्र मनु से भी अधिक जिद्दी थी। वह एक ही कार्य को बार-बार करती थी जो उनकी भूलने की बीमारी से उत्पन्न हुई समस्या थी। शुक्ति डरने लगती है कि उसकी अम्मा एकदम निष्क्रिय ब्लैक होल हो गई है। जब अम्मा ने अपनी भूलने की बात घर में बताई तब शुक्ति के डैडी उसे डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर अम्मा की उस बीमारी के बारे में बताते हुए कहता है कि– "आपकी पत्नी को अल्जाइमर है। इस बीमारी में जो भी नर्सें याददाश्त को केंद्र होती हैं वे किन्हीं अज्ञात कारणों से नष्ट होने लगती हैं। निश्चित तौर पर यह कहा नहीं जा सकता क्योंकि यह बीमारी मरने के उपरांत ही सिद्ध की जा सकती है। दिमाग की ऑटोप्सी के बाद! पर जो भी लक्षण दिखाई दे रहे हैं वे कुछ-कुछ इस ओर इशारा करते हैं।"[3]

डॉक्टर का अनिश्चित सा निष्कर्ष घर में एक आशा जगा देता है कि अम्मा को केवल कमजोरी है। अम्मा के कहने पर उसे अल्जाइमर की फैसिलिटी में भर्ती कर दिया गया। डैडी को दिल का दौरा पड़ता है जिससे उनकी मृत्यु हो जाती है। शुक्ति अपने डैडी की फोटो अम्मा को दिखाती है अम्मा समझ नहीं पाती। तब उसके दादा ने अम्मा को बच्चे की तरह पकड़ कर उससे लिपटकर दुलार से जोर-जोर से रोकर यह बात बताई। अम्मा ने तब समझा और कहा, "रोते नहीं बच्चे!" एक गहरी मानवीय संवेदना छोड़ देती है।

प्रवास करने वाले भारतीयों को विदेशी भूमि पर जाकर एक अलग मानवीय

अनुभव होता है जो उनकी चेतना पर भीतरी दबाव डालता है। वह स्वयं को दो सभ्यताओं और संस्कृतियों के बीच फँसा हुआ महसूस करते हैं। प्रवासी मूल देश और प्रवास के देश दोनों में अपनी पहचान तलाशता रहता है। अपने देश में परंपरागत तौर-तरीके से रहने वाला व्यक्ति जब प्रवास में आता है तो स्वयं को 'कल्चरल शॉक' से पीड़ित अनुभव करता है। उसका देश ही नहीं उसका परिवेश, जीवन शैली और कार्य पद्धति सभी कुछ बदल जाता है। उसे स्वयं को एक नई व्यवस्था में डालना पड़ता है। प्रवासी के इस नई व्यवस्था में ढल जाने के बाद भी अपनी पहचान को बनाए रखने का द्वंद्व उसके मन में चलता रहता है। विदेश में रहने के बावजूद उसके अनुभव और अभिव्यक्ति के तार स्वदेश की यादों से जुड़े रहते हैं और जब तक स्वदेश लौटना होता है, तब तक विश्व ग्राम की संस्कृति देश के नगरों और गाँवों तक पैर पसार चुकी होती हैं। प्रवासियों को अपनी यादों में बसे देश से नितांत भिन्न भारत देखने को मिलता है। जिससे उन्हें 'रिवर्स कल्चरल शॉक' लगता है। अमेरिकी प्रवासी हिंदी लेखिका अनिल प्रभा कुमारी की कहानी 'बहता पानी' में ऐसा ही दृश्य देखने को मिलता है– "शायद मैं उसी पुरानेपन, उन्हीं बिछड़े सुखों की तलाश में लौटी हूँ। वह मेरी कंफर्ट जोन है। इस नएपन में मेरी पहचान खो जाती है और मैं अपने को गँवाना नहीं चाहती।"[4]

प्रवासी साहित्य में प्रवास जीवन के चित्रण के साथ मानवीय संवेदना का स्वर बुलंद हो उठता है। प्रवासी साहित्यकार 'प्राण शर्मा' ने देश विदेश की संस्कृति और दशा का सही अवलोकन किया है। प्राण शर्मा की 'पराया देश' कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ संवेदना से परिपूर्ण हैं। प्रवासी लेखक विदेश में रहकर भी अपनी मातृभूमि के प्रति लगाव नहीं भूल पाता। वर्तमान परिवेश से सामंजस्य बिठाते हुए स्वयं को स्थापित भले ही कर लें, लेकिन नई परंपराओं से सामंजस्य तथा पुरानी परंपराओं के मोह के बीच का अंतर्द्वंद्व साफ झलकता है। 'पराया देश' में प्रवासी लेखकों का दर्द उनके भोग अनुभव को अंकित किया गया है, उनमें वेदना के कई पहलू देखने को मिलते हैं– प्रवासी लोगों के साथ समतामूलक व्यवहार नहीं होता, उन्हें यह अहसास कराया जाता है कि वे आर्थिक रूप से पिछड़े देश से आए हैं, जिससे प्रवासियों में हीन भावना भरती है। 'पराया शहर' में गणित का प्राध्यापक सपरिवार 16 वर्ष पूर्व ब्रिटेन पहुंचा था बाद में वह बस का ड्राइवर बना। उसके पास सब कुछ है पर रंगभेद की भावना उसके आत्म-सम्मान को चोटिल करती है। वह उस आर्थिक संपन्नता से क्षुब्ध है; जहां उसकी अस्मिता पर प्रहार हो रहा है वह सोचता है– "जहां मान नहीं, इज्जत नहीं वहां रहना ही क्यों... पराये देश में सुख और आराम से जीने से अपने देश में गरीबी और भूखे रहना कहीं अच्छा है।"[4] लेकिन

क्या वह अपने वतन इतनी सरलता से कभी वापस आ पाता है?.... नहीं परिस्थितियाँ उन्हें तोड़ती हैं, फिर वहीं... पराये देश में रहने के लिए विवश करती हैं।

सुधा ओम ढींगरा अपनी कहानियों में पात्रों के मानसिक द्वंद्व, तनाव का वर्णन करती है। उनके पात्रों पर यह मानसिक स्थिति बाहर से थोपी हुई प्रतीत नहीं होती बल्कि ऐसा लगता है कि कोई मनोवैज्ञानिक ही इस स्थिति का विश्लेषण कर रहा है। 'कमरा नंबर 103' और 'बिखरते रिश्ते' कहानी परिवार के लोगों द्वारा मानसिक प्रताड़ना झेलने वाले वृद्धों की कहानी हैं। 'कमरा नंबर 103' मिसेज मेहता की कहानी है जो अपने ही पुत्र के दोगले रूप को देख तनाव ग्रस्त होकर कोमा में पहुँचती है, ये शुरू में इस बात को नहीं समझ पाती कि उसका बेटा उसे भारत से अपने होने वाले बच्चे की देखभाल करने के लिए उसे आया के रूप में लाया, इस बात का उसे बहुत देर बाद पता चला और मानसिक द्वंद्व के चलते कोमा में पहुंच जाती हैं, जिसका उनके सहायक के कथन से पता चलता है, "साहब लोग अंकल से चैकों पर हस्ताक्षर करवाकर चले जाते हैं। जब से अंकल वृद्ध आश्रम आए हैं, किसी से बात नहीं करते, बस दीवारों की तरफ देखते रहते हैं और जब कोई उन्हें बुलाता है, वो हाथ आगे बढ़ा देते हैं कि कहां साइन करने हैं?"[4] वृद्धों के मानसिक संताप को सुधा ओम ऐसे व्यक्त करती हैं जैसे यह सब उनकी आंखों के आगे घटित हो रहा हो। इनकी कहानियों में विश्वासघात, टूटते रिश्ते, कुंठा, सिसकियां, अंतर्द्वंद्व सभी का वर्णन है। उन्होंने अपने जीवन और समाज की विसंगतियां को देखा, भोगा और परखा है तथा मानव मन की तहों को खोलने में सुधा जी सफल हुई हैं।

इस प्रकार ये प्रवासी कहानियाँ मर्म को छूने वाली हैं, संवेदना से परिपूर्ण हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य में प्रवासी भारतीयों तथा वहां के मूल निवासियों की मानवीय संवेदना को देखा जा सकता है। प्रवासी भारतीयों के संबंध में यह मानवीय संवेदना परायेपन की अनुभूति, मनःस्थिति से संघर्ष और नई पहचान के रूप में दृष्टिगोचर होती है। यह साहित्य प्रवासी भारतीयों तथा भारत के नागरिकों के बीच सम्पर्क स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्रवासी हिंदी साहित्य की वर्तमान संवेदना उनकी मातृभूमि से उत्पन्न होने वाले प्रेम के रूप में भी देखा जा सकता है। प्रवासी साहित्यकारों के लिए भारतभूमि की मिट्टी को भुला पाना आसान नहीं है। प्रवास की समस्याओं और संघर्षों की वास्तविकताओं से भरा यह साहित्य हमें मानव के जुझारू होने की सीख देने के साथ ही सदैव प्रयत्नशील होने की सीख भी देता है। प्रवासी हिंदी साहित्य संवेदना का स्वरूप न केवल भारतीयों की मनःस्थिति को अभिव्यक्त करने के रूप में स्थापित हो रहा है, बल्कि यह विदेशियों की मनः स्थिति को भी अभिव्यक्त कर रहा है। अतः स्पष्ट है कि वर्तमान प्रवासी हिंदी साहित्य सम्पूर्ण मानवीय समाज की संवेदना को अपने में समेटे हुए हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी लघुकथा का मनोविज्ञान, बलराम अग्रवाल, राही प्रकाशन दिल्ली, पृ. 117
2. प्रतिनिधि अप्रवासी हिन्दी कहानियाँ, संपादक हिमांशु जोशी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृ. 324
3. प्रवासी हिन्दी साहित्य-दशा एवं दिशा, संपादक प्रो. प्रदीप श्रीधर, तक्षशिला प्रकाशन, पृ. 536
4. प्रवासी आवाज, डॉ. अंजना सधीर, पार्श्व पब्लिकेशन्स, संस्करण 2008, पृ.110
5. पराया देश, छोटी और बड़ी कहानियाँ - प्राण शर्मा, पृ. 10
6. कमरा नं. 103, सुधा ओम ढींगरा, पृ.83